भारत सरकार
गृह मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3858
दिनांक 11 अगस्त, 2026/20 श्रावण, 1948 (शक) को उत्तर के लिए

बादल फटने की घटनाएँ

3858. डॉ. राजीव भारद्वाज:

क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने हिमाचल प्रदेश राज्य में बादल फटने की बढ़ती घटनाओं के कारणों का पता लगाने के लिए कोई अध्ययन कराया है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या मौसम विशेषज्ञों की रिपोर्टों के अनुसार, जलवायु परिवर्तन तथा अवैज्ञानिक निर्माण गतिविधियां बादल फटने और अन्य आपदाओं की घटनाओं में वृद्धि के लिए उत्तरदायी हैं?

उत्तर

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री नित्यानंद राय)

(क) एवं (ख): जी, महोदय। हिमाचल प्रदेश में बादल फटने, आकस्मिक बाढ़, भूस्खलन तथा अत्यधिक वर्षा की घटनाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता को देखते हुए, एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय दल का गठन किया गया है। इस दल में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की, भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर तथा अन्य संबंधित एजेंसियों के विशेषज्ञ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, भारत मौसम विज्ञान विभाग, केंद्रीय जल आयोग तथा भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण से प्राप्त इनपुट को भी इसमें सम्मिलित किया गया है। दल को राज्य में बढ़ रही चरम मौसम घटनाओं के कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन करने, सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों की भौगोलिक एवं जमीनी परिस्थितियों का विश्लेषण करने, विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त आंकड़ों का संकलन एवं अध्ययन करने तथा ऐसी आपदाओं के प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए दीर्घकालिक उपायों की सिफारिश करने का दायित्व सौंपा गया है।

(ग): मौसम विशेषज्ञों, वैज्ञानिक संस्थानों तथा राज्य प्राधिकरणों द्वारा उपलब्ध कराए गए आकलनों से संकेत मिलता है कि जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप हिमालयी क्षेत्र में अत्यधिक वर्षा की घटनाओं की तीव्रता एवं आवृत्ति में वृद्धि हो रही है। ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फ का तेज़ी से पिघलना और मोरेन (हिमनद मलबे) का अस्थिर होना, ऑफ-सीज़न में ढलान के धंसने और पानी के तेज़ बहाव का कारण बनता है। बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय दल अध्ययन के अनुसार, इस क्षेत्र में जोखिम बढ़ने में मानवजनित गतिविधियों का भी योगदान रहा है।

***